Regd. with Registrar of News Papers of India of PUN BIL 2002/07848: Postal Reg.No.GDP-41/2023-2025

Vol: 23
Issue: 04

Monthly ANSARULLAH Qadian

MAJLIS ANSARULLAH BHARAT

2025
April

मासिक अन्सारुल्लाह क़ादियान

Date of Publication : 10-04-2025

हदीस ऐ नबीवी :

لَا يَفْرَكْ مُؤْمِنٌ مُؤْمِنَةً إِنْ كَرِهَ مِنْهَا خُلُقًا رَضِيَ آخَرَ

मुमिन को अपनी मुमिना बीवी से नफरत
और घृणा नहीं रखना चाहिए
अगर उसकी एक बात उसे नापसंद है ,
तो दूसरी बात पसंदीदा हो सकती है।

(सहीह मुस्लिम)

www.ansarullahbharat.in | Editor: Hafiz Syed Rasool Niyaz | Honorary Editor: H.Shamsuddin

मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत की मुखपत्रिका

मासिक

अन्सारुल्लाह

क़ादियान

अप्रैल 2025 शहादत 1404 हि.श.	प्रबंधक अताउल मुजीब लोन	संस्करण–23 **अंक** -04

सम्पादक : सय्यद रसूल नियाज | एजाज़ी सम्पादक : एच्.शम्सुद्दीन

स.सम्पादक(हिन्दी) : वसीम अहमद अज़ीम

संपादन मंडल
सय्यद कलीम अहमद अजबशेर
मोहम्मद इब्राहीम सरवर

मैनेजर
ताहिर अहमद बेग
99152 23313

प्रेस
फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस
क़ादियान
वार्षिक मूल्य :₹ 250
विदेश: $ 50

प्रकाशन स्थान
ऐवाने अन्सार, भारत
क़ादियान 143516
जिला : गुरदासपुर, पंजाब
फोन : 7837985190

Email:
ansarullah@qadian.in

WEB LINK
https://www.ansarullah
bharat.in/Publications/

विषय सूची	पृष्ठ
सुखद पारिवारिक जीवन	2
इरशाद-ए-रब्बानी	3
हदीस-ए- नबवी	3
रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का आदर्श	3
सीरत-ए-महदीअलैहिस्सलाम	4
हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह़िल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला	5
यह है एक मुस्लिम पति!	6
बच्चों का स्वास्थ और बीमारियों का इलाज	8
क्या शादी के बाद लड़कियां अपना नाम बदलकर पति के नाम के साथ रख सकती हैं?	10

सुखद पारिवारिक जीवन

عَاشِرُوهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ

हज़रत खलीफ़तुल मसीह अलखामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं:

"तरबियत में यह भी शामिल करें कि अंसार में एक रुझान पैदा हो गया है कि घरों में झगड़े बहुत होते हैं, तो अंसार की यह तरबियत भी करें कि ज़रा अपनी पत्नियों से हुस्ने-सुलूक(अच्छा व्यवहार) किया करें।"

(ऑनलाइन मुलाक़ात - मजलिस अंसारुल्लाह भारत, हवाला: अलफ़ज़ल इंटरनेशनल,16 जुलाई 2021)

आपसी प्रेम और समर्पण पर आधारित एक आदर्श परिवार समाज की भलाई और स्थिरता के लिए रीढ़ की हड्डी के समान होता है। यह वह पवित्र स्थान है जहाँ व्यक्ति के संस्कार और उसके जीवन के उतार-चढ़ाव, सफलता और असफलता का निर्धारण होता है। इसलिए यह आवश्यक है कि पारिवारिक माहौल खुशहाल और आनंदमय हो। इस बगिया की देखभाल में स्त्री और पुरुष दोनों की समान भागीदारी होती है, हालांकि पुरुष को इस जिम्मेदारी का कुछ अधिक भार उठाना पड़ता है।

एक आदर्श पारिवारिक जीवन की असली सुंदरता तभी प्रकट होती है जब पति-पत्नी एक-दूसरे की भावनाओं और संवेदनाओं को समझने का प्रयास करें।

माता-पिता को अपने बच्चों के लिए एक उज्ज्वल उदाहरण और मार्गदर्शक बनना चाहिए। उनकी थोड़ी-सी भी लापरवाही बच्चों के जीवन पर गहरा प्रभाव छोड़ सकती है और वे उसी रास्ते पर चलने लगते हैं।

एक सुखी परिवार के लिए आपसी दुआओं का भी बहुत महत्व है। हमारे प्रिय नबी हज़रत मुहम्मद ﷺ की पवित्र सुन्नत पर चलते हुए, हज़रत मसीह मौऊद[अलैहिस्सलाम] भी नियमित रूप से अपने परिवार के लिए दुआ किया करते थे। यह हमारे लिए एक अनुकरणीय उदाहरण है और एक आदर्श परिवार की स्थापना के लिए अनिवार्य पहलू भी।

हज़रत मसीह मौऊद[अलैहिस्सलाम] फरमाते हैं:

"यदि तुम चाहते हो कि शांति से रहो और तुम्हारे घरों में अमन बना रहे, तो आवश्यक है कि खूब दुआएं करो और अपने घरों को दुआओं से भर दो। जिस घर में हमेशा दुआ की जाती है, अल्लाह तआला उसे कभी तबाह नहीं करता।" (मलफ़ूज़ात, जिल्द 3, पृष्ठ 232)

(एच.शमसुद्दीन)

इरशाद-ए-रब्बानी

رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ أَزْوَاجِنَا وَذُرِّيَّاتِنَا قُرَّةَ أَعْيُنٍ
وَاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِينَ إِمَامًا ○ (الفرقان 75)

हे हमारे प्रभु! हमें हमारे जीवनसाथियों और हमारी संतान से आंखों कि ठण्डक प्रदान कर और हमें धर्मनिष्ठों का मार्गदर्शक बना। (अल-फ़ुरक़ान 75)

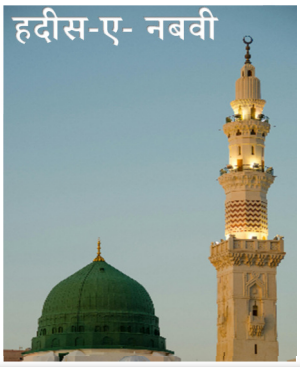

خَيْرُكُمْ خَيْرُكُمْ لِأَهْلِهِ
وَأَنَا خَيْرُكُمْ لِأَهْلِي

तुममें से बेहतर व्यक्ति वह है
जो अपनी पत्नी के साथ व्यवहार करने में बेहतर है।
और मैं अपने परिवार के साथ व्यवहार करने में तुम सब से बेहतर हूँ। (तिर्मिज़ी)

अर्थात:अच्छे व्यवहार का मापदंड तुम्हारा कोई स्वयं निर्मित नियम नहीं होगा,बल्कि इस मामले में मेरे आदर्श को देखा

रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का आदर्श

हज़रत ख़दीजा की याद

हज़रत खदीजा[रज़ि] की जिंदगी में ही नहीं बल्कि उनकी वफ़ात के बाद भी कई सालों तक आप[ﷺ] ने दूसरी शादी नहीं की और हमेशा मोहब्बत और वफ़ा के जज़्बात के साथ हज़रत खदीजा[रज़ि] के मोहब्बत भरे सुलूक को याद किया। आपकी सारी औलाद जो हज़रत खदीजा[रज़ि] से थी, उनकी तरबियत और परवरिश का खूब ख़याल रखा। न सिर्फ़ उनके हक़ अदा किए बल्कि खदीजा[रज़ि] की अमानत समझकर उनसे कमाल दर्जे की मोहब्बत फ़रमाई। हज़रत खदीजा[रज़ि] की बहन हाला की आवाज़ कान में पड़ते ही खड़े होकर उनका इस्तकबाल करते और ख़ुश होकर फ़रमाते, "खदीजा[रज़ि] की बहन हाला आई है।" घर में कोई जानवर ज़िबह होता तो उसका गोश्त हज़रत खदीजा[रज़ि] की सहेलियों में भिजवाने की ताकीद फ़रमाते। ग़रज़ कि आप[ﷺ] खदीजा[रज़ि] की वफाओं के तज़करे करने से थकते न थे।

रहीम व करीम

हज़रत आयशा[रज़ि] फ़रमाया करती थीं

सीरत-ए-महदी अलैहिस्सलाम

हज़रत ख़लीफ़तुल मसिह़िल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला फरमाते हैं: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पति के कर्तव्यों और पत्नी से सौम्यता से पेश आने का ज़िक्र करते हुए फरमाते हैं कि "अश्लीलता के अलावा बाकी सारी सख़्त बातें और कड़वे बोल पत्नियों के बर्दाश्त करने चाहिए" और यह भी फरमाया कि "हमें यह बहुत ही अशोभनीय लगता है कि पुरुष होकर नारी से झगड़ा करें। अल्लाह ने हमें पुरुष बनाया है, यह वास्तव में एक बहुत बड़ी नेमत है। इसका शुक्र यह है कि हम औरतों से स्नेह और मृदुलता से व्यवहार करें।"

एक बार किसी मित्र की कठोरता और कटु वाणी का ज़िक्र हुआ कि वह अपनी पत्नी से बहुत रूख़ेपन से पेश आता है। यह सुनकर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अत्यंत दुखी हुए और फरमाया "हमारे अनुयायियों को ऐसा नहीं होना चाहिए।" फिर उन्होंने काफ़ी देर तक गृहस्थ जीवन और पत्नी से व्यवहार के बारे में चर्चा की और अंत में फरमाया:

"मेरा यह हाल है कि एक बार मैंने अपनी पत्नी से ऊँची आवाज़ में बात कर ली थी, और मुझे एहसास हुआ कि शायद इसमें मेरे मन की कोई वेदना भी शामिल थी। इसके बावजूद भी मैंने कोई कटु या कठोर शब्द नहीं कहा।"

इसके बाद आप फरमाते हैं: "इसके बाद मैंने बहुत देर तक इस्तग़फ़ार किया, बड़े विनम्रता से नफ़्लें पढ़ीं और कुछ दान भी किया, क्योंकि यह सख़्ती शायद मेरी किसी छुपी हुई ख़ता का परिणाम थी।"

(मलफूज़ात, जिल्द 2, पृष्ठ 1-2)
(ख़ुत्बा जुमा, 19 मई 2017)

(पृ.3 से)

कि रसूलुल्लाह ﷺ ने कभी कोई कठोर शब्द अपनी ज़ुबान पर नहीं लाया। वह आगे फरमाती हैं कि आप ﷺ तमाम लोगों से अधिक नरम मिज़ाज और सबसे ज्यादा करीम थे। साधारण इंसानों की तरह बिना किसी तकल्लुफ़ के घर में रहते थे। आपने कभी चेहरे पर शिकन नहीं डाली, बल्कि हमेशा मुस्कुराते रहते थे। हज़रत आयशा रज़ि. का यह भी बयान है कि आपने अपनी पूरी ज़िंदगी में कभी किसी ख़ादिम या अपनी किसी बीवी पर हाथ नहीं उठाया।

(शमाइल-ए-तिर्मिज़ी, बाब फी ख़ल्के रसूलुल्लाह ﷺ)

أنا ذريّة لا أهلي

हज़रत ख़लीफ़तुल मसिहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला

हज़रत सैय्यदा अम्मतुस सबूह बेगम साहिबा (हरम हज़रत ख़लीफ़तुल मसिहिल ख़ामिस, अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़) तहरीर फ़रमाती हैं:

गृहस्थी के कामों में भरपूर मदद

हज़ूर अनवर की ज़िंदगी ख़िलाफ़त से पहले भी दीनी ख़िदमत के लिए वक्फ़ थी... मगर जिस चीज़ ने सबसे पहले मेरे दिल में हज़ूर की क़दर बढ़ाई, वह यह थी कि उन्होंने कभी ख़ुदगर्ज़ी (selfishness) नहीं दिखाई। हमेशा, अपनी दीनी मस्रूफ़ियात के बावजूद, मेरी और बच्चों की अपनी ताक़त के मुताबिक़ देखभाल की।

घरेलू कामों में मदद करना

घाना में हमेशा पानी की कमी रही... हज़ूर सुबह नमाज़ के बाद बाल्टियों से पानी भरते। जितना भी ज़रूरी काम होता, कभी यह नहीं कहा कि "आज मैं मस्रूफ़ हूँ, तुम खुद भर लो।" जब कभी मैं बीमार होती, तो खाना बनाने की ज़िम्मेदारी खुद सँभालते और बच्चों को क़ुरआन पाक पढ़ाने में मेरी पूरी मदद करते।

बच्चों की बीमारी के दौरान ख़िदमत

अगर कभी बच्चे बीमार हो जाते, तो हज़ूर अय्यदहुल्लाह हर तरह से मेरी मदद फ़रमाते। मीटिंग्स के दौरान, जब मर्दों की भीड़ की वजह से मुझे किचन जाने में परेशानी होती, तो फ़ीडर खुद धोकर तैयार कर देते।

सफ़र में भी ख़्याल रखना

1991 में जब हमारा क़ादियान जाने का प्रोग्राम बना, तो... पूरे सफ़र की तैयारी, सारा सामान पैक करना, बिस्तर बाँधना और हर ज़रूरत का ध्यान रखना—यह सब काम हज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला ने बहुत हिम्मत से सँभाले और सफ़र व हज़र में मेरे साथ सभी बुज़ुर्गों का भी खूब ख़्याल रखा।

सादा घरेलू ज़िंदगी

हज़ूर की तबीयत बहुत साफ़-सुथरी लेकिन सादा मिज़ाज है। जो सादा घरेलू ज़िंदगी ख़िलाफ़त से पहले थी, वही अब भी है। उन्होंने अपनी दिनचर्या में कोई बदलाव नहीं आने दिया। आप खाने में कभी नुक़्स नहीं निकालते, और रिज़्क़ का ज़रा भी ज़ाया(व्यर्थ) करना पसंद नहीं।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह के ख़लीफ़ा बनने के बाद की बात है कि एक बार मेरी तबीयत बहुत ख़राब थी। मुझे बहुत तेज़ सिरदर्द हो रहा था, तो हज़ूर ने पहले मेरे लिए नाश्ता तैयार किया, फिर अपना नाश्ता बनाया और फिर दफ़्तर गए।

अब भी, अपनी बेहद मस्रूफ़ ज़िंदगी के बावजूद, गमलों में फूल लगाना, पौधों की देखभाल करना, ऐसे काम खुद कर लेते हैं।

(माहनामा तश्हीज़ुल अज़्हान, सितम्बर-अक्टूबर 2008,पृ.14-22)

اَنَا خَيْرُكُمْ لِاَهْلِیْ

इस्लामी शिक्षाओं के अनुसार

यह है एक मुस्लिम पति!

◆ आपसी अधिकारों का सम्मान – पति-पत्नी को एक-दूसरे का सम्मान करना चाहिए, जैसे कि पुरुषों को महिलाओं का संरक्षक बनाया गया है और महिलाएँ आज्ञाकारी होती हैं तथा गुप्त मामलों की रक्षा करने वाली होती हैं। (सूरह अन-निसा)

◆ अच्छा व्यवहार – अपने परिवार वालों के साथ अच्छा व्यवहार करो, जैसा कि रसूल अल्लाहसल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:"तुम में से सबसे अच्छा वह है जो अपने परिवार के साथ अच्छा व्यवहार करता है।" (मुस्लिम)

◆ एक-दूसरे का वस्त्र बनना – पति-पत्नी एक-दूसरे के लिए वस्त्र के समान हों, यानी वे एक-दूसरे के लिए सुंदरता का कारण बनें और एक-दूसरे की कमियों को छुपायें। (सूरह अल-बक़रह)

◆ आपसी स्नेह और प्रेम – पति-पत्नी के बीच प्रेम और स्नेह होना चाहिए, जैसा कि रसूल अल्लाहसल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:"तुम जो कुछ अपने लिए खर्च करते हो, वह सदक़ा है। जो अपने बच्चे को खिलाते हो, वह भी सदक़ा है। और जो अपनी पत्नी को खिलाते हो, वह भी सदक़ा है।" (सहीह बुख़ारी)

◆ घर के कामों में मदद – पति को चाहिए कि वह घर के कामों में अपनी पत्नी की मदद करे, जैसे कि रसूल अल्लाहसल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने घर के कामों में मदद करते थे। (सहीह बुख़ारी)

◆ पत्नी का सम्मान – पति को अपनी पत्नी का सम्मान करना चाहिए, जैसा कि रसूल अल्लाहसल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "मोमिनों में सबसे पूर्ण ईमान वाला वह है जो सबसे अच्छे अख़लाक़ वाला है, और तुम में सबसे अच्छा वह है जो अपनी स्त्रियों के लिए सबसे अच्छा है।" (तिर्मिज़ी)

◆ पत्नी की कमियों को नज़रअंदाज़ करना – पति को चाहिए कि वह अपनी पत्नी की कमियों को नज़रअंदाज़ करे और उसकी अच्छाइयों को सराहे, जैसा कि रसूल अल्लाहसल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "कोई मुस्लिम पुरुष किसी मुस्लिम महिला से द्वेष न रखे। यदि उसे उसकी कोई आदत या स्वभाव पसंद नहीं आता, तो उसमें कोई और गुण अवश्य होगा जो उसे पसंद आए।"(सहीह मुस्लिम)

◆ पत्नी की बीमारी में देखभाल करना – पति को चाहिए कि जब पत्नी बीमार हो, तो उसकी देखभाल करे, जैसा कि रसूल अल्लाहसल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी बीवियों की देखभाल करते थे।(सहीह बुख़ारी)

◆ पत्नी से सलाह-मशविरा करना – पति

को चाहिए कि वह महत्वपूर्ण मामलों में अपनी पत्नी से मशविरा करे, जैसा कि रसूल अल्लाहसल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी बीवियों से मशविरा किया करते थे। (सुनन अबू दाऊद)

◆ पत्नी की ग़लतियों को माफ़ करना – पति को चाहिए कि वह अपनी पत्नी की ग़लतियों को माफ़ कर दे, जैसा कि रसूल अल्लाहसल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी बीवियों की ग़लतियों को माफ़ कर दिया करते थे। (सूरह अत-तग़ाबुन)

◆ पत्नी की तारीफ़ करना – पति को चाहिए कि वह अपनी पत्नी की तारीफ़ करे, जैसा कि रसूल अल्लाहसल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी बीवियों की तारीफ़ किया करते थे। (सुनन तिर्मिज़ी)

◆ पत्नी के रिश्तेदारों का सम्मान करना – पति को चाहिए कि वह अपनी पत्नी के रिश्तेदारों का सम्मान करे, जैसा कि रसूल अल्लाहसल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी बीवियों के रिश्तेदारों का सम्मान करते थे। (सहीह बुख़ारी)

◆ पत्नी के साथ नरमी से पेश आना – पति को चाहिए कि वह अपनी पत्नी के साथ नरमी से पेश आए, जैसा कि रसूल अल्लाहसल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी बीवियों के साथ नरमी से पेश आते थे।(सहीह मुस्लिम)

◆ पत्नी को मारने से बचना –रसूल अल्लाहसल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "तुम में से कोई व्यक्ति अपनी पत्नी को ग़ुलामों की तरह न मारे और फिर दिन के आख़िरी हिस्से में उसके साथ हमबिस्तर हो।" (सुनन अबू दाऊद)

◆ पत्नी के साथ समय बिताना – पति को चाहिए कि वह अपनी पत्नी के साथ समय बिताए, जैसा कि रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी बीवियों के साथ समय बिताते थे। (सहीह बुख़ारी)

◆ पत्नी की राय का सम्मान करना – पति को चाहिए कि वह अपनी पत्नी की राय का सम्मान करे, जैसा कि रसूल अल्लाहसल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी बीवियों की राय का सम्मान किया करते थे।(सुनन अबू दाऊद)

◆ पत्नी के प्रति वफ़ादार रहना – पति को चाहिए कि वह अपनी पत्नी के प्रति वफ़ादार रहे, जैसा कि रसूल अल्लाहसल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी बीवियों के साथ वफ़ादार थे। (सूरह अन-निसा)

◆ पत्नी के साथ सब्र से काम लेना – पति को चाहिए कि वह अपनी पत्नी के साथ सब्र से पेश आए, जैसा कि रसूल अल्लाहसल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी बीवियों के साथ सब्र से काम लेते थे।(सूरह अश-शूरा)

◆ पत्नी के प्रति कृतज्ञ रहना – पति को

"शिक्षा प्राप्त करना हर मुस्लिम पुरुष एवं स्त्री का कर्त्तव्य है"

MUSTAFA

BOOK CO

All kinds of Academic Book of Kerala Board, CBSE, ISCS & Universities

Fort Road

KANNUR-1 (KERALA)

Mobile : 09895655426

बच्चों का स्वास्थ और बीमारियों का इलाज

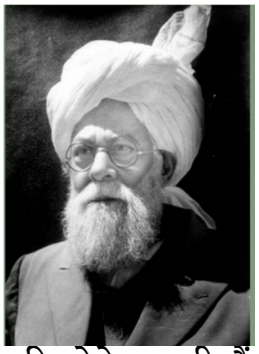

हज़रत मुस्लेह मौऊद (र.अ)

"बच्चे को हमेशा साफ़-सुथरा रखा जाए... बच्चे में सबसे पहले बुराई गंदगी की वजह से पैदा होती है। जब बच्चा अपने गुप्त अंगों को साफ़ नहीं रखता, तो वह उन्हें खुजलाने लगता है। इससे उसे आनंद का अनुभव होता है और इसी तरह उसमें यौनिक प्रवृत्तियों का एहसास जागृत हो जाता है। अगर बच्चे को साफ़ रखा जाए और जैसे-जैसे वह बड़ा हो, उसे यह बताया जाए कि इन अंगों को स्वच्छ रखना ज़रूरी है, तो वह अनैतिक बुराइयों से काफ़ी हद तक बच सकता है। यह प्रशिक्षण जन्म के पहले दिन से ही शुरू होना चाहिए।"

- खाने-पीने की आदतों का असर – बच्चे को नियत समय पर भोजन देना चाहिए। इससे बच्चे में इच्छाओं को नियंत्रित करने की आदत विकसित होती है और वह कई गुनाहों से बच सकता है। चोरी, लूटपाट और अन्य कई बुराइयाँ इसी कारण जन्म लेती हैं कि इंसान अपनी इच्छाओं पर काबू नहीं रख पाता।
- संयम की आदत डालना – यदि बच्चा रोता है और माँ तुरंत उसे दूध पिला देती है, तो इससे उसकी इच्छाएँ बिना किसी रोक-टोक के पूरी होने लगती हैं, जो आगे चलकर बुरी आदतों में बदल सकती हैं। इसीलिए ज़रूरी है कि बच्चे को एक निर्धारित समय पर दूध और भोजन दिया जाए। बड़ी उम्र के बच्चों में भी यह आदत डालनी चाहिए कि वे समय पर खाना खाएँ।
- समय की पाबंदी का एहसास
- इच्छाओं को नियंत्रित करना
- स्वास्थ्य का ध्यान रखना
- मिलकर काम करने की आदत – जब बच्चे एक साथ बैठकर भोजन करेंगे और कार्यों में भाग लेंगे, तो उनमें स्वार्थ और स्वार्थी मानसिकता नहीं होगी, बल्कि वे सहयोग और परोपकार की भावना विकसित करेंगे।
- फ़िज़ूलख़र्ची से बचाव – यदि बच्चों को हर समय खाने की चीज़ें दी जाएँगी,

Mobile : 9572858090, 9955553631

NEW MOBILE POINT

TABASSUM FANCY STORE

Mosabi Market No. 3, East Singhbhum

JHARKHAND Pin - 832104

तो वे कुछ खाएँगे और कुछ बर्बाद करेंगे। लेकिन यदि उन्हें समय पर और एक निश्चित मात्रा में भोजन मिलेगा, तो वे संसाधनों की क़द्र करना सीखेंगे और फ़िज़ूलख़र्ची से बचेंगे।

◆ लालच पर नियंत्रण – यदि बच्चा बाज़ार में कोई चीज़ देखकर उसे लेने की ज़िद करे और उसे तुरंत न दी जाए, तो यह उसके भीतर इच्छाओं पर नियंत्रण रखने की क्षमता विकसित करेगा।

◆ संतुलित आहार का महत्व – भोजन में विभिन्न प्रकार की चीज़ें सम्मिलित की जाएँ, जैसे माँस, सब्ज़ियाँ और फल, क्योंकि आहार से भी अलग-अलग प्रकार के चरित्र (अख़लाक़) उत्पन्न होते हैं... हाँ, बचपन में माँस की मात्रा कम और सब्ज़ियाँ अधिक होनी चाहिए, क्योंकि माँस उत्तेजना बढ़ाता है और बचपन में यह प्रवृत्ति कम होनी चाहिए।

◆ अत्यधिक लाड़-प्यार से बचना – बच्चों को बहुत अधिक चूमने या दुलारने से उनमें बुरी आदतें जन्म ले सकती हैं।

◆ बीमारी में विशेष देखभाल – यदि बच्चे लंबे समय तक बीमार रहें, तो उनमें डर, स्वार्थ, चिड़चिड़ापन और भावनाओं पर नियंत्रण न रख पाने जैसी बुरी आदतें विकसित हो सकती हैं।

◆ भयभीत करने वाली कहानियों से बचाव – बच्चों को डरावनी कहानियाँ नहीं सुनानी चाहिए, क्योंकि इससे उनमें कायरता और अनावश्यक भय उत्पन्न होता है।

◆ ज़िद करने की आदत रोकना – यदि बच्चा किसी चीज़ की ज़िद करे, तो उसका ध्यान किसी अन्य कार्य में लगा देना चाहिए ताकि ज़िद करने की प्रवृत्ति समाप्त हो जाए।

◆ शारीरिक व्यायाम और सहनशीलता – बच्चों को शारीरिक रूप से मज़बूत और मेहनती बनाने की शिक्षा देनी चाहिए, क्योंकि यह दुनियावी सफलता और आत्म-सुधार दोनों के लिए आवश्यक है।(संदर्भ: मिन्हाजुत्तालेबीन, पृष्ठ 58-65)

INDIAN AUTO

हर प्रकार की मोटर गाड़ियों के पार्टस सस्ते रेट पर खरीदें।

P. Ali Koya

CALICUT (KERALA)

पृ.7 से:

चाहिए कि वह अपनी पत्नी के प्रति आभार व्यक्त करे, जैसा कि रसूल अल्लाह[सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम] अपनी बीवियों के लिए कृतज्ञ रहते थे। (सूरह इब्राहीम)

◆ पत्नी के लिए दुआ करना – पति को चाहिए कि वह अपनी पत्नी के लिए दुआ करे, जैसा कि रसूल अल्लाह[सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम] अपनी बीवियों के लिए दुआ किया करते थे। (सूरह अल-फ़ुरक़ान)

(प्रेषक:सय्यद कलीम अहमद अजब्शेर)

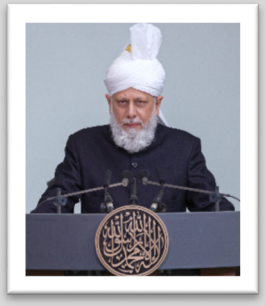

निर्देश हज़रत खलीफ़तुल मसीह अलखामिस

अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़

क्या शादी के बाद लड़कियां अपना नाम बदलकर पति के नाम के साथ रख सकती हैं?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला फरमाते हैं:

"कोई हर्ज नहीं है। रख लेती हैं तो क्या हो गया? अब उनकी जो पहचान है सरकारी कागज़ों में, तो मजबूरी है। कुछ मामलों में सरकारी कागज़ों में एक नाम, जैसे 'अतिया बाबर', पिता के नाम के साथ दर्ज होता है। जब उसकी शादी हो जाएगी और उसकी रजिस्ट्रेशन होगी, तो शादी के दस्तावेज़ या सरकारी कागज़ों में यदि उसका नाम 'अतिया मुबश्शिर' हो जाता है, यानी 'बाबर' की जगह 'मुबश्शिर' आ जाता है, तो इसमें क्या हर्ज है?

इस्लाम में इसकी पूरी इजाज़त है कि पत्नी अपने पति के नाम के साथ अपना नाम जोड़ सकती है। उसका मूल नाम तो 'अतिया' ही रहेगा। दूसरा नाम तो केवल पहचान के लिए होता है—पहले उसकी पहचान उसके पिता से थी, और शादी के बाद उसकी पहचान उसके पति से हो जाती है। बल्कि यह एक अच्छी बात है, क्योंकि जब पत्नी पति के नाम से जानी जाएगी, तो पति को अपनी पत्नी की इज़्ज़त का और पत्नी को अपने पति की इज़्ज़त का अधिक ख़याल रहेगा। इससे दोनों के बीच प्यार और आपसी संबंध और मज़बूत होंगे। इसलिए, पति के नाम के साथ नाम रखने में कोई हर्ज नहीं।"

(संदर्भ: अल-फ़ज़ल इंटरनेशनल, 21 अगस्त 2021)

(बहवाला: रोज़नामा अल-फ़ज़ल, 19 अगस्त 2022)

SONET
SOLUTIONS
PRIVATE LIMITED
No.41, II Cross, Doctors Layout,
Kasturi Nagar,
BANGALORE - 560043
तालिबे दुआ :
MUSADDIQ AHMAD
Mobile : 098451-98560
Tel : +91 (80) 41636612
Web : www.sonetsolutions.in

रिफ्रेशर क्लास ओहदेदारान
मज्लिस अन्सारुल्लाह ओडिशा

तरबियती जलसा
मज्लिस अन्सारुल्लाह टेलिचेरी (कन्नूर,केरला)

रिफ्रेशर कोर्स मजालिस
आमिला ज़िला मलापुरम, केरला

रिफ्रेशर कोर्स महमूदाबाद केरंग, ओडिशा

तरबियती जलसा फेज़ाबाद, श्रीनगर (जम्मू कश्मीर)